प्रेम वाहिनी

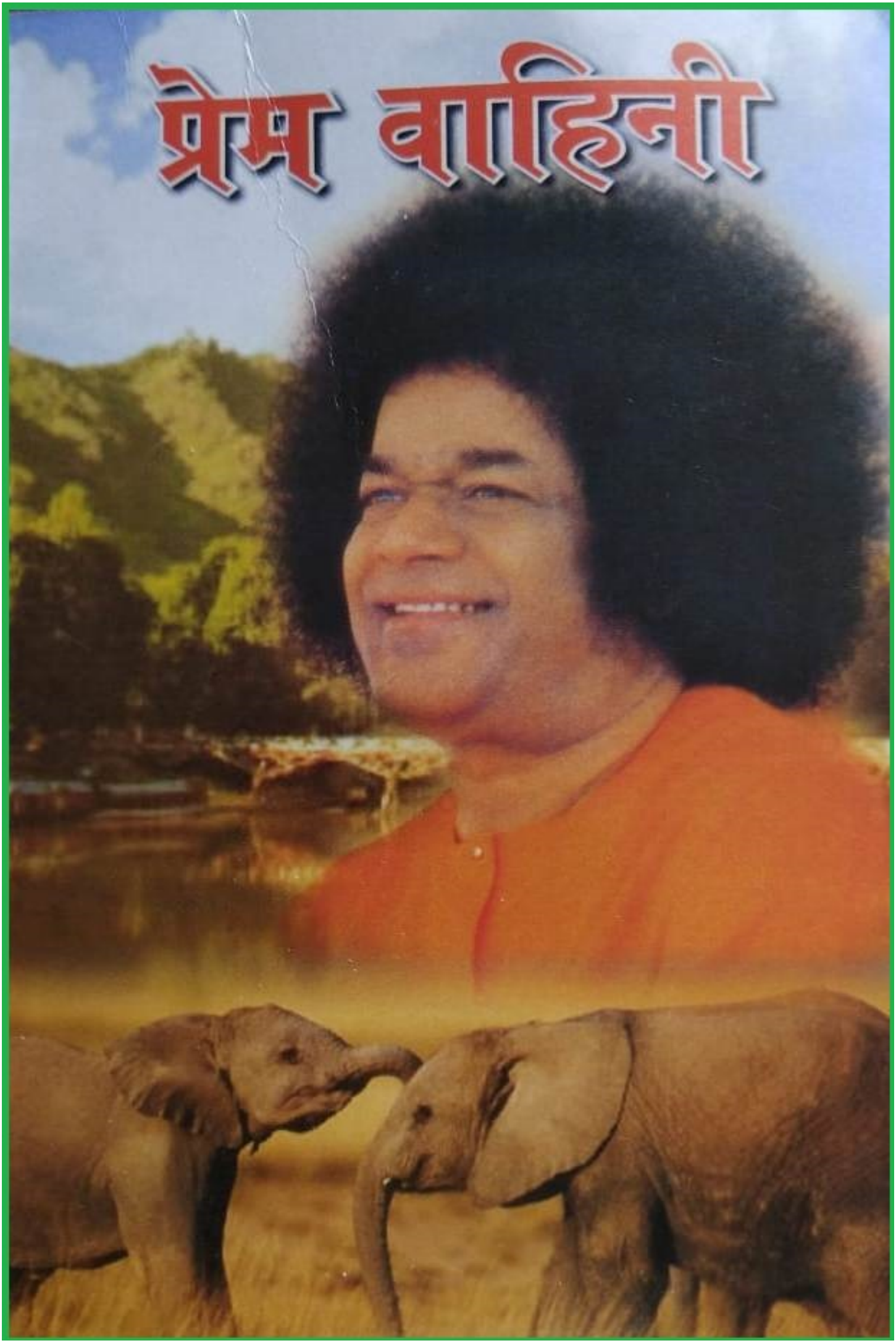

१९

साधक के लिए आज ही का दिन तो उसका है, परन्तु, कल?

शिव के समान ही यम भी सर्वव्यापी होता है! यम का सम्बन्ध देह व शरीर से होता है, वह जीव को प्रभावित नहीं करता है। शिव का सम्बन्ध जीव से होता है, परन्तु वह शरीर को असीमित अवधि के लिए चिरस्थाई नहीं रखते। शरीर तो जीव का अनिवार्य वाहन है, जो उसे अपनी वास्तविक प्रकृति को ज्ञान करने के लिए दिया जाता है। फिर भी कौन जानता है कि कब वह यम की भेंट का लक्ष्य बन जाये? वही देह का स्वामी होता है। कौन जानता है कि कब यम इस शरीर को अपने मृत्यु पाश में जकड़ लेंगे? सरलता से नाशवान् इस शरीर के निवासी जीव को इतना तो समझ ही लेना चाहिए और सावधान होकर शिव में लय होने का अविलम्ब प्रयास प्रारम्भ कर देना चाहिए। हर घड़ी इसके लिए उपयुक्त, शुभ और कल्याणकारी है, बीत जाने वाला एक भी क्षण किसी प्रक्रिया से वापस नहीं किया जा सकता है। लोग कुछ करते-करते देर करते रहते हैं और आज के काम को आगामी कल के लिए स्थगित करते रहते हैं और बीते हुये कल का काम आज निपटाते हैं। परन्तु साधना के कृत्य इस प्रकृति के नहीं होते हैं। उनके लिए तो आज ही का दिन है, न तो बीता हुआ और न आगामी कल, किसी का उनके लिए अस्तित्व नहीं होता है। यही वर्तमान क्षण साधना का है। जो पल बीतता है वह तुम्हारी पहुँच से बाहर हो जाता है, उसी प्रकार आगामी क्षण भी तुम्हारा नहीं है। जो जीव इस ज्ञान को अपने हृदय में अच्छी तरह अंकित कर लेता है वही शिव में लीन हो सकता है। इस सत्य को आत्मसात् किये बिना तो जीव आज और आगामी कल की अपनी योजनाओं और लक्ष्यों में व्यस्त रहता है जो कि इस शरीर के महत्व पर आधारित होती है और इस प्रकार

वह सांसारिक असक्तियों की नींव डालती है अतः जीव बार-बार शरीर धारण कर जन्मता है और यम के दर्शन करता रहता है। साधक का अधिकार है कि वह शिव दर्शन प्राप्त करे, न कि यम दर्शन। वह इसकी इच्छा नहीं करेगा, इसका अनुमान भी नहीं करेगा। केवल वे ही जो इस देह-देही सम्बन्ध को जानते हैं, मानव हैं और जिन्होंने इस सिद्धान्त को अपना लिया है वे अपनी साधना से किंचित्मात्र भी विचलित नहीं होते हैं। आजकल तो मानव विनाशवान् सांसारिक सुखों पर दृष्टि जमाये रहता है और उन्हें प्राप्त कर सन्तुष्ट हो जाता है। फिर भी उसे विश्रान्ति नहीं है। रातें सोकर और दिन खा-पीकर बिताये जाते हैं, इस प्रकार बढ़ते-बढ़ते उसका बुढ़ापा आ जाता है और मृत्यु पीछे पड़ जाती है। तब वह यह नहीं निश्चित कर पाता है कि कहाँ जावे और क्या करे? उसकी सभी इन्द्रियाँ शिथिल और निर्बल हो जाती हैं। इस स्थिति से उसका उद्धार कोई नहीं कर पाता है। इस प्रकार वह मृत्यु के जबड़ों में आज्ञाकारी ग्रास की तरह जाकर इह लीला समाप्त करता है।

कैसी दयनीय स्थिति है कि यह मानव जीवन, जो बहुमूल्य हीरे से भी बढ़कर मूल्यवान् है, जिसका मूल्य आंका भी नहीं जा सकता है, वह एक घटिया, सस्ते, घिसे-पिटे सिक्के की तरह सस्ता बनाकर बिताया जाता है ! व्यर्थ में इसे नष्ट करने के पश्चात् पश्चाताप करने से कोई लाभ नहीं है यदि भगवान का ध्यान और उसे प्राप्त करने के लिए साधना न की गई। जब घर में आग लग जावे तब कुँआ खोदने की योजना बनाने से क्या लाभ होगा? यह कब खोदा जावेगा? उससे पानी कब उपलब्ध होगा? आग कब तक बुझाई जा सकेगी? यह तो असम्भव कार्य है। यदि प्रारम्भ में ही वहाँ पहले से कोई कुँआ होता तो आज इस विपत्ति की घड़ी में अथवा अन्य संकटों पर कितना लाभदायक होता। जीवन के अंतिम दिनों में भगवदाराधना की योजना बनाना ऐसा ही रहेगा जैसा कि ऊपर के उदाहरण में आग लग जाने पर कुँआ खोदना। इसलिए यदि कोई इसी समय से भगवान की आराधना प्रारम्भ करके, आगे इसे चालू रक्खे तो इससे अंत समय में बड़ा लाभ होगा। जो साधना आगामी कल को प्रारम्भ करने वाली हो उसे आज ही प्रारम्भ करो। जो साधना आज

प्रारम्भ करनी है उस अभी इसी क्षण प्रारम्भ कर दो। कोई नहीं जानता कि अगले क्षण में उसके जीवन में क्या होगा? इसलिए साधना प्रारम्भ करने में विलम्ब करना अक्षम्य है। इस साधना के लिए भी शारीरिक क्षमता अपेक्षित होती है इसलिए शरीर का रक्षण-पोषण वाँछनीय है, स्मरण रहे सीमातीत रक्षण-पोषण करना भी उतना ही हानिकारक बन जाता है। जिस सीमा तक उचित है, उसी तक इसकी देखभाल बड़ी सावधानी से करनी चाहिए।